कथा सरिता

ऐसे हुआ घमंडी धनिक का अहंकार चूर

बंगाल के विख्यात कवि और नाटककार गिरीशचंद्र घोष को अपार लोकप्रियता प्राप्त थी। इसके बावजूद उनमें लेश मात्र भी अहंकार नहीं था। अपने आचरण में वे सर्वथा सहज और सादगी संपन्न थे। घोष बाबू के एक बहुत अमीर मित्र थे, जो सदैव अपनी संपन्नता के घमंड में चूर रहते थे। घोष बाबू को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी, लेकिन मित्र को कुछ कहने में संकोच होता था। हालांकि एक दिन उन्हें मित्र को समझाने का अवसर सुलभ हो गया। अपने यहां आयोजित एक भोज में उन्होंने अपने मित्र को भी आमंत्रित किया। वे जब भी कहीं पर जाते, तो साथ में उनका नौकर चांदी के बर्तन लेकर चलता। वे उन्हीं बर्तनों में भोजन करते। घोष बाबू के यहां भी उन्होंने यही किया। घोष बाबू को यह देखकर, उन्हें सबके साथ न बैठाते हुए अलग बैठाकर पत्तल-दोने में भोजन परोसवाया। मित्र को यह बात नागवार गुज़री, किंतु दोस्ती के कारण कुछ कह नहीं पाए और मन मारकर भोजन किया। जाने लगे तो घोष बाबू का रसोइया उन चांदी के पात्र में व्यंजन भरकर ले आया। घोष बाबू ने अपने अमीर मित्र से कहा, 'आपके सत्कार में कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमा कीजिएगा। आपका नौकर चांदी के बर्तन लाया तो मेरे यहां के लोगों ने सोचा कि घर के बच्चों के लिए भोजन ले जाने के लिए ये पात्र लाए गए हैं। अत: उन्होंने इसमें कुछ सामग्री रख दी है। कृपा कर हमारी ओर से यह बच्चों को दीजिएगा और आपके साथ तो हमारी आत्मीयता है ही। घोष बाबू की बातों से उनके मित्र लज्जा से पानी-पानी हो गए। भविष्य में फिर कभी कहीं भी वे अपने चांदी के बर्तन लेकर नहीं गए। निरहंकार संपन्नता यश देती है। यदि अहंकार आ जाए तो वह अपयश का कारण बनता है।

बीरबल ने पकड़ा गहनों का चोर!

अकबर को गहनों का बहुत शौक था। बादशाह के महल में 8 नौकर ऐसे थे, जो उनके वस्त्र और आभूषण की देखरेख करते थे। वे ही अकबर को दरबार में जाने के लिए तैयार भी किया करते थे। किसी और को अकबर के कमरे में घुसना मना था। एक दिन अकबर को अपनी प्रिय अंगूठी पहननी थी। लेकिन अंगूठी वहां नहीं थी। अकबर क्रोधित हो गए और अंगूठी ढूंढ निकालने का आदेश दिया। काफी प्रयासों के बाद अंगूठी नहीं मिली। अकबर ने अंत में बीरबल को बुला भेजा और कहा - हमें वह अंगूठी बहुत प्रिय थी। हमें वह अंगूठी चाहिए। बीरबल ने कहा - जहांपनाह आप बेफिक्र हो जाएं, आप शीघ्र ही अपनी अंगुली में वह अंगूठी पहन लेंगे। बीरबल ने उन सभी 8 नौकरों को बुलाया, जो अकबर के कमरे में जाते थे। बीरबल ने उन सभी को एक ही आकार की एक-एक लकड़ी दी और दूसरे दिन उस लकड़ी को साथ लेकर आने को कहा। बीरबल ने लकड़ी देते हुए कहा कि, जिस किसी ने वह अंगूठी चुराई है, उसकी लकड़ी एक ही रात में एक इंच लम्बी हो जाएगी। अगली सुबह आठों नौकरों में से एक नौकर को बीरबल, बादशाह के पास ले गया। वह नौकर अकबर के पैरों में गिर गया और उसने अपनी गलती मान ली कि उसी ने अंगूठी चुराई है। बादशाह आश्चर्यचकित थे। बादशाह ने बीरबल से पूछा कि उसने कैसे चोर को पकड़ा? बीरबल ने सारी बात राजा को बताई और अंत में कहा - जहांपनाह, गुनहगार ने पकड़े जाने के डर से अपनी लकड़ी को एक इंच काट लिया, बस यहीं उससे भूल हो गई। बादशाह ने भरे दरबार में बीरबल की प्रशंसा की और चोर को उचित दंड दिया।

बहराइच-बनारस (उ.प्र.)। ए.बी.सिंह,सी.जे.एम. को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.जया एवं ब्र.कु.साधना।

ज्ञान की शोभा सादगी

कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रेसीडेंट कॉलेज में प्रथम दिन जब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपनी कक्षा में विद्यार्थी के रूप में पहुंचे तो वहां का दृश्य देखकर हैरान रह गए। वहां के अधिकांश लड़के अंग्रेजी वेशभूषा (कोट और पतलून) में थे। कुछ मुस्लिम लड़के भी थे, जो पायजामा पहने हुए थे और सिर पर टोपी थी। ये मदरसे के छात्र थे और एफ. ए. करने के लिए प्रेसीडेंट कॉलेज में पढ़ते थे। इन लड़कों का उपस्थिति रजिस्टर अलग रखा जाता था। अंग्रेजी वेशभूषा वाले लड़के इन मुस्लिम लड़कों को हिराकत की दृष्टि से देखते थे और उनका उपहास भी करते थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की वेशभूषा लगभग मुस्लिम लड़कों जैसी ही थी। अध्यापक ने हाज़िरी के लिए एक-एक कर सबका नाम पुकारा लेकिन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का नाम नहीं पुकारा गया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपने स्थान पर खड़े हुए। लड़के उनकी ग्रामीण पोशक देखकर हंसने लगे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बोले, 'सर! आपने मेरा नाम नहीं पुकारा। मुझे अपना रोल नंबर मालूम नहीं है।' अध्यापक ने उन पर एक दृष्टि डाली और रजिस्टर बंद करते हुए बोले, 'रुको, मैंने अभी मदरसे के छात्रों की उपस्थिति नहीं लगाई है।' डॉ. प्रसाद ने कहा, सर! मैं मरदसे का छात्र नहीं हूं। मैं बिहार से आया हूं और मेरा नाम अभी-अभी लिखा गया होगा।' अध्यापक ने उनका नाम पूछा। जैसे ही उन्होंने 'राजेन्द्र प्रसाद' कहा, अध्यापक बोले, 'ओह! तो तुम ही राजेन्द्र हो, जिसने कलकत्ता विश्वविद्यालय की एंट्रेंस में टॉप किया है।' संकोची राजेन्द्र बाबू ने कुछ न बोलते हुए सिर झुका लिया। लेकिन उपहास करने वाले छात्रों की दृष्टि शर्म से झुक गई। उनके मन में राजेन्द्र बाबू की योग्यता के प्रति सम्मान भाव जाग गया। वेशभूषा से किसी की योग्यता को नहीं मापा जा सकता। वस्तुत: ज्ञान, सादगी में ही शोभता है।

कर्म की महानता

एक बार बुद्ध एक गांव में अपने किसान भक्त के यहां गए। शाम को किसान ने उनके प्रवचन का आयोजन किया। बुद्ध का प्रवचन सुनने के लिए गांव के सभी लोग उपस्थित थे, लेकिन वह भक्त ही कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। गांव के लोगों में कानाफूसी होने लगी कि कैसा भक्त है कि प्रवचन का आयोजन करके स्वयं गायब हो गया। प्रवचन खत्म होने के बाद सब लोग घर चले गए। रात में किसान लौटा। बुद्ध ने पूछा, कहां चले गए थे? गांव के सभी लोग तुम्हें पूछ रहे थे।

किसान ने कहा, दरअसल प्रवचन की सारी व्यवस्था हो गई थी, पर तभी अचानक मेरा बैल बीमार हो गया। पहले तो मैंने घरेलू उपचार करके उसे ठीक करने की कोशिश की, लेकिन जब उसकी तबीयत ज्यादा खराब होने लगी तो मुझे उसे लेकर पशु चिकित्सक के पास जाना पड़ा। अगर नहीं जाता तो वह नहीं बचता। आपका प्रवचन तो मैं बाद में भी सुन लूंगा। अगले दिन सुबह जब गांव वाले पुन: बुद्ध के पास आए तो उन्होंने किसान की शिकायत करते हुए कहा, यह तो आपका भक्त होने का दिखावा करता है। प्रवचन का आयोजन कर स्वयं ही गायब हो गया।

बुद्ध ने उन्हें पूरी घटना सुनाई और फिर समझाया, उसने प्रवचन सुनने की जगह कर्म को महत्व देकर यह सिद्ध कर दिया कि मेरी शिक्षा को उसने बिल्कुल ठीक ढंग से समझा है। उसे अब मेरे प्रवचन की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं यही तो समझाता हूं कि अपने विवेक और बुद्धि से सोचो कि कौन-सा काम पहले किया जाना ज़रूरी है। यदि किसान बीमार बैल को छोड़कर मेरा प्रवचन सुनने को प्राथमिकता देता तो दवा के बगैर बैल के प्राण निकल जाते। उसके बाद तो मेरा प्रवचन देना ही व्यर्थ हो जाता। मेरे प्रवचन का सार यही है कि सब कुछ त्यागकर प्राणी-मात्र की रक्षा करो। इस घटना के माध्यम से गांव वालों ने भी उनके प्रवचन का भाव समझ लिया।

इन्दौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् परमात्म स्मृति में खड़े हैं प्रताप नगर गुरुद्वारा समिति के मेम्बर सुरजीत सिंग टुटेजा, बोहरा समाज के आमिल भाई, ब्र.कु. शशी तथा अन्य।

जबलपुर-नेपियर टाउन। शिव संदेश शांति यात्रा के अन्तर्गत विभिन्न झाँकियों एवं रैली में सम्मिलित मंडी अध्यक्ष राजा बाबू सोनकर, नेता प्रतिपक्ष नगर निगम विनय सक्सेना, विकास अधिकारी एल.आई.सी. प्रदीप गुप्ता एवं ब्र.कु.भावना।

कोलकाता। मेट्रो रेल्वे के जी.एम. राजीव भार्गव को शिव जयन्ती महोत्सव के दौरान ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कानन। साथ हैं एच.पी.कनोरी,चेयरमैन एस.आर.ई.आई. फाउंडेशन।

बरेली-राजेन्द्र नगर (उ.प्र.)। शिवजयन्ती के अवसर पर शहर में शोभा यात्रा के दौरान ब्र.कु. शरद, ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य भाई-बहनें।

होडल-हरियाणा। शिवरात्रि कार्यक्रम पर केक काटते हुए एस.डी.एम. सत्यवान इंदोरा, पंकज गोयल, ब्र.कु.उषा तथा अन्य।

शाहजहाँपुर-उ.प्र.। 78वीं महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अंतर्गत ब्र.कु. ज्वाला प्रसाद,भुवनेश्वर, सर्वेश पाल, ब्र.कु. अनिल तथा अन्य।